पतंग

कवि–आलोक धन्वा

कवि परिचय :– आलोक धन्वा सातवें दशक के बहुचर्चित कवि हैं। आपका जन्म 1948 में बिहार के मुंगेर जिले में हुआ। आप के द्वारा की गई साहित्य सेवा के कारण इन्हे राहुल सम्मान मिला। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने इन्हें साहित्य सम्मान से सम्मानित किया। इन्हें 'बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान' व 'पहल सम्मान' से नवाजा गया। वे पिछले दो दशकों से देश के विभिन्न हिस्सों में सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय रहे हैं। उन्होंने जमशेदपुर में अध्ययन मंडलियों का संचालन किया तथा साहित्य पर कई राष्ट्रीय संस्थानों व विश्वविद्यालयों में अतिथि वक्ता के रूप में भागीदारी की है।

पाठ परिचय :– तेज वर्षा का भादों का महीना बीत गया है तथा शरद ऋतु आ गई है। आकाश स्वच्छ निर्मल है। पतंग उड़ाने का मौसम आ गया है। बच्चे पतंग उड़ाते हुए सीटियाँ और किलकारियाँ मार रहे हैं। बच्चे कपास की तरह कोमल हैं तथा डाली की तरह लचीले हैं। बच्चे पतंग उड़ाते हुए छतों के खतरनाक किनारों तक आ जाते हैं। उन का रोमांचित शरीर व पतंग की डोर उन्हें गिरने से बचाती है। किसी कारण वश वे गिर जाते हैं और बच जाते हैं, तो वो और भी निडर, साहसी और आत्म विश्वासी हो जाते हैं। जीवन में भी खतरे उठाने वाले जब अपने कार्य में सफल होते हैं, तो वे भी साहसी व आत्मविश्वासी हो जाते हैं।

सबसे तेज बौछार गयी भादो गया
सवेरा हुआ
खरगोश की आँख जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साईकिल तेज चलाते हुए
घंटा बजाते हुए .जोर–.जोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए
पतंग उड़ाने वाले बच्चो के झुण्ड को
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके –
दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन ची.ज उड़ सके
दुनिया का सबसे पतला काग.ज उड़ सके –
बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके –
कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और
तितलियों की इतनी ना.जुक दुनिया

शब्दार्थ :– भादो = भादो का महीना, शरद = शरद ऋतु, झुंड = समूह, इशारों = संकेतों, मुलायम = कोमल, रंगीन = रंग बिरंगी, किलकारी = खुशी से परिपूर्ण हँसी, ना.जुक = कोमल

व्याख्या :– सबसे तेज वर्षा का मौसम, भादो का महीना बीत गया है। सवेरा हुआ खरगोश की आँख जैसा लाल सवैरा है, अर्थात् आकाश में बादल नहीं हैं। आकाश स्वच्छ निर्मल है। लगता है शरद ऋतु आ गई है। ऐसा लगता है कि शरद ऋतु पुलों को पार करते हुए, चमकीली साइकिल चलाते हुए, घंटी बजाते हुए, चमकीले इशारों से बच्चों को बुला रही है, अर्थात् अनेक ऋतुओं के पुलों को पार कर के तेजी से शरद ऋतु आ गई है। स्वच्छ निर्मल आकाश बच्चों को संदेश दे रहा है कि पतंग उड़ाने का मौसम आ गया है। पतंग दुनिया की सबसे हल्की रंगीन चीज है, जो पतले कागज और बाँस की पतली कमानी से बनी है। जब रंग बिरंगी तितली सी पतंगें आकाश में उड़ती हैं, तब बच्चे प्रसन्न हो कर सीटियाँ बजाते हैं और किलकारियाँ मारते हैं।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सहज, सरल, खड़ी बोली तथा उर्दू के शब्दों का सुन्दर प्रयोग किया है–जैसे तेज़, ज़ोर, इशारा, मुलायम, कागज़ आदि।
2. शरद ऋतु का मानवीकरण किया गया है इसलिए मानवीकरण अलंकार।
3. खरगोश की आँख जैसा लाल सवेरा उपमा अलंकार।
4. ज़ोर ज़ोर पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार।
5. बिंबों का सुन्दर प्रयोग, दृश्य एवं श्रव्य बिंब।
6. पतंग के लिए सुन्दर विशेषणों का प्रयोग।
7. छंद मुक्त रचना।

जन्म से ही वे अपने साथ लाते है कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे वेग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक –
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं
महज़ एक धागे के सहारे
पतंगों के साथ–साथ वे भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे

शब्दार्थ :– बेसुध = बेहोश होकर, मृदंग = ढोल जैसा वाद्य यंत्र, डाल = वृक्ष की शाखा, अकसर = प्रायः, रोमांचित = पुलकित, महज = केवल, पेंग भरना = झूला झूलना

व्याख्या :– पतंग उड़ाने वाले बच्चे कपास (रूई) की तरह कोमल हैं। रूई से कोमल बच्चे जब पतंग के पीछे बेसुध हो कर दौड़ते हैं, तब लगता है पृथ्वी पैरों के वेग के साथ घूम रही है। इन्हें छतों की कठोरता भी कोमल लगती है। दौडते हुए उनके पैरों से जो आवाज उत्पन्न होती है तो लगता है दिशाएँ मृदंग की तरह बजने लगी हो। पतंग उड़ाने वाले बच्चे पेंग भरते हुए दोड़ते हैं। ये बच्चे वृक्ष की शाखा की तरह लचीले होते हैं। पतंग उड़ाते हुए ये अकसर छतों के खतरनाक किनारों तक आ जाते हैं। उस समय इन का रोमांचित शरीर उन्हें बचाता है तथा बचाती है उन्हें आकाश को छूती पतंग की डोर। पतंग के साथ–साथ बच्चों का रोम रोम पतंग के साथ उड़ रहा है।

VASUNDHARAHINDI.COM

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सहज सरल खड़ी बोली तथा उर्दू के शब्दों का सुन्दर प्रयोग उर्दू के शब्द–कपास, बेचैन, बेसुध, अकसर, खतरनाक आदि
2. छन्द मुक्त रचना
3. दृश्य और श्रव्य बिंबों का सुन्दर प्रयोग

दृश्य बिंब –

– पृथ्वी घूमती हुई आती है
– छतों के खतरनाक किनारे
– पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ आदि

श्रव्य बिंब – दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते

स्पर्श बिंब – छतों को कोमल बनाते हुए

4. मानवीकरण अलंकार –
   – पृथ्वी को घूमते हुए आना
   – दिशाओं का मृदंग की तरह बजना
   – पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ
5. उपमा अलंकार –
   – दिशाओं का मृदंग की तरह बजना
   – पेंग भरते हुए चले आते हैं
   – डाल की तरह लचीले

अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास ।

शब्दार्थ :– निडर = बिना डरे, बेचैन = व्याकुल

व्याख्या :– पतंग उड़ाने वाले बच्चे अगर कभी छतों के खतरनाक किनारों से गिर जाते हैं और बच जाते है, तो और भी निडर हो जाते हैं और बिना डरे सुनहरे सूरज का सामना करते हैं और अपने बेचैन पैरों से पृथ्वी नाप लेते हैं और उनका उत्साह कई गुना बड़ जाता है, अर्थात् कोई व्यक्ति जब खतरों का सामना करता है और खतरों पर विजय प्राप्त कर लेता है तो और अधिक निडर हो जाता है और उस का उत्साह बढ़ जाता है और बड़ा खतरा उठा सकता है। जीवन में जिसने भी खतरा उठाया वो बड़े से बड़ा लक्ष्य पाता है।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सहज सरल खड़ी बोली तथा उर्दू के शब्दों का सुन्दर प्रयोग। उर्दू के शब्द–खतरनाक, निडर, तेज़ आदि
2. छन्द मुक्त रचना
3. दृश्य और श्रव्य बिंबों का सुन्दर प्रयोग

दृश्य बिंब –

– छतों के खतरनाक किनारे
– उनके बेचैन पैर

4. मानवीकरण अलंकार – पृथ्वी और भी तेज घूमती है
5. अनुप्रास अलंकार – सुनहले सूरज

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'सबसे तेज बौछारें गयी, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।
उत्तर :– कवि का कहना है– सबसे तेज बौछार वाला भादो का महीना चला गया है, आज सुबह का आकाश खरगोश की आँख जैसा लाल है, अर्थात् दूर–दूर तक बादल नहीं हैं। आकाश स्वच्छ निर्मल है। ऐसा लगता है शरद ऋतु आ गई है, पुलों को पार करते हुए, अपनी तेज साईकिल चलाते हुए, चमकीले इशारे करते हुए। शरद ऋतु उन बच्चों को निमन्त्रण दे रही है, जो पतंग उड़ाना चाहते हैं।

प्रश्न 2. सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज, सबसे पतला कागज, सबसे पतली कमानी जैसे विशषणों का प्रयोग क्यों किया है ?
उत्तर :– कवि ने पतंग को सबसे हलकी और रंगीन चीज कहा, उसे पतले कागज, पतली कमानी से बना कहा है। कवि ने पतंग के लिए इन विशेषताओं का प्रयोग इस लिए किया, जिस से वह पतंग की ओर पाठकों का ध्यान खींच सके और पतंग को सर्वश्रेष्ठ बता सके।

प्रश्न 3. बिम्ब स्पष्ट करें–
1) सबसे तेज बौछारें गयी भादों गया
2) सवेरा हुआ
3) खरगोश की आँख जैसा लाल सवेरा
4) शरद आया पुलों को पार करता हुआ
5) अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए
6) घंटी बजाते हुए ज़ोर–ज़ोर से
7) चमकीले इशारों से बुलाते हुए
8) आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
9) पतंग ऊपर उठ सक

उत्तर :– 1) सबसे तेज बौछारें गयी भादों गया (दृश्य बिंब)
2) सवेरा हुआ (दृश्य बिंब)
3) खरगोश की आँख जैसा लाल सवेरा (दृश्य बिंब)
4) शरद आया पुलों को पार करता हुआ (दृश्य बिंब)
5) अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए (दृश्य बिंब)
6) घंटी बजाते हुए ज़ोर–ज़ोर से (श्रव्य बिंब)
7) चमकीले इशारों से बुलाते हुए (दृश्य बिंब)
8) आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए (दृश्य बिंब)
9) पतंग ऊपर उठ सके (दृश्य बिंब)

प्रश्न 4. जन्म से ही वे अपने साथ लाते है कपास– कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है ?
उत्तर :– बच्चे जन्म से ही कपास के समान कोमल होते हैं। जैसे कपास हल्की, मुलायम होती है, उसी प्रकार बच्चे भी बहुत मुलायम होते हैं। हल्के होने के कारण ऊँचाई से गिरने के बाद भी चोट नहीं खाते।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 5. पतंगों के साथ–साथ वे भी उड़ रहे हैं–बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है ?
उत्तर :– बच्चे पतंग उड़ाते हैं तो उत्साह और उमंग से भर उठते हैं। जितनी ऊँची पतंग उड़ती है ,उतना ही उनका दिल भी ऊँचा उड़ता है और उन के रोम–रोम रोमांचित हो जाते हैं।

प्रश्न 6. (क) छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
(ख) अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर हो कर सुनहले सूरज के सामने आते हैं।

i) दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य है ?
उत्तर :– जब बच्चे पेंग भरते हुए दौड़ते हैं , तब उन के पदों से पदचाप उत्पन्न होती है। उसकी गूँज चारों ओर सुनाई देती है। ऐसे लगता है जैसे दिशाएँ मृदंग की तरह बज उठी हों।

ii) जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए क्या आपको छत कठोर लगती है ?
उत्तर :– जब पतंग सामने हो तो पूरा ध्यान पतंग पर होता है। ऐसे में निश्चित रूप से छत की कठोरता हमें अनुभव नहीं होती।

iii) खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद आप दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को कैसा महसूस करते हैं ?
उत्तर :– खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद व्यक्ति निडर हो जाता है। उसे जीवन की चुनौतियां मुश्किल नहीं लगती। ये नियम है –व्यक्ति छोटी चुनौतियों का सामना करता है और उन पर विजय पाते हुए बड़ी चुनौतियों का सामना करता है।

प्रश्न 7. 'महज एक धागे के सहारे, पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ' बच्चों को कैसे थाम लेती हैं ?
उत्तर :– जब बच्चे पतंग उड़ाते हैं तो पूरी तरह पतंग उड़ाने में मगन हो जाते हैं। उन का शरीर रोमांचित हो उठता है। उस समय पतंग का धागा एक ओर पतंग को नियंत्रित करता है, तो दूसरी ओर बच्चों को भी नियंत्रित करता है।

प्रश्न 8. पतंगबाजी के माहौल का वर्णन कीजिए ?
उत्तर :– शरद ऋतु के आते ही आकाश स्वच्छ निर्मल हो जाता है । पतंग बाजी का मौसम आते ही रंग–बिरंगी तितलियों–सी पतंगें आकाश में उड़ने लगती हैं। बच्चे सीटी बजा कर और किलकारियाँ मार कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। बच्चे पतंग उड़ाते हुए छतों के खतरनाक किनारों तक आ जाते हैं। उस समय उन के रोमांचित शरीर को महज एक पतंग की डोर गिरने से बचाती है।

प्रश्न 9. किशोर और युवा वर्ग समाज का मार्गदर्शक है। कैसे ?
उत्तर :– किशोर और युवा वर्ग में एक उत्साह होता है, काम के प्रति जुनून होता है। वो खतरे उठाते हैं और निडर होते हैं। वास्तव में ये किशोर और युवावर्ग ही समाज के मार्गदर्शक हैं, देश के कर्णधार हैं। इस लिए समाज का कर्तव्य है कि इनके मार्गदर्शन को समझे तभी समाज का स्वरूप बदल सकता है।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM